मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय : जैनविद्या एवं प्राकृत

(Based on National Education Policy 2020)

संकाय – मानविकी

2023 – 2024 से प्रभावी, Ist & IInd सेमेस्टर प्रणाली

2024 – 2025 से प्रभावी, IIIrd & IVrth सेमेस्टर प्रणाली

DOC	COC	FACULTY MEETING	AC
18.05.2024	29.05.2024	05.06.2024	

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय : जैनविद्या एवं प्राकृत

पाठ्यक्रम का महत्त्व एवं उपयोगिता

1. यह पाठ्यक्रम भारतीय ज्ञान परम्परा को आधार बनाकर तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम से प्राचीन संस्कृति, पुरातात्विक चिंतन, भाषा, ज्ञानपरम्परा की धरोहर पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण एवं सम्पादन कला, साहित्य एवं इतिहास की जानकारी विद्यार्थियों को दिये जाने में सहायक होगा।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राकृत भाषा एवं साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राकृत भाषा एवं साहित्य का ज्ञान होगा। साथ ही भारतीय इतिहास-पुरातत्त्व, प्राकृत अपभ्रंश भाषा एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं का अध्ययन के अन्तर्सम्बन्ध को जानने मिलेगा।
3. भारतीय योगपरम्परा में जैनधर्म की योग परम्परा अतिसमृद्ध है। इस परम्परा के साहित्य में अंकित जैन योग के माध्यम से बाह्य शुद्धि एवं अन्तरंग शुद्धि का अध्ययन, साथ ही विभिन्न योगपरक मूल्यों की उपयोगता, योग के विभिन्न नियमों और अभ्यास की जानकारी विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास में सहायक होगी।

प्राकृत भाषा एवं जैन साहित्य के अध्ययन की उपयोगिता के कतिपय बिन्दु निम्न है-

- वैदिक युग में प्राकृत भाषा लोकभाषा थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते-आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि यह और सदाचार की भाषा बन सकी।
- सम्राट अशोक के समय में प्राकृत जनभाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे राज्य भाषा होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। ई.पू. 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार अभिलेख प्राकृत में लिखे गये हैं।
- खारबेल द्वारा हाथीगुम्फा में प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख ने अपने देश भारत वर्ष का नाम 'भरध-वस' सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख के रूप में मिलता है।

- भारतीय संस्कृति, समाज एवं पारिवारिक जीवन को जानने/समझने का एक मात्र आधार भाषा होती है, क्योंकि प्राकृत भाषा में निबद्ध साहित्य में हमारे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों और तीर्थंकर महापुरुषों के नैतिकपूर्ण संस्कार, रीति-नीति, व्यवहार आदि सभी बातें हमें कहीं-न-कहीं हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक कर्त्तव्यों की ओर प्रेरित कराने में सक्षम हैं।
- प्राकृत भाषा में रचित साहित्य में ऋषि-मुनियों एवं तीर्थंकर महापुरुषों का वर्णन धर्म की ओर आकर्षित करता है। इनके जीवन-चरित के माध्यम से हम इहलोक से मोक्ष तक यात्रा करने में समर्थ हो सकते हैं।
- जैन आगम प्राकृत साहित्य में वर्णित सामुद्रिक यात्राएँ जो हमें पुरुषार्थ की ओर अग्रसर करती हैं। जहाँ नायक अपनी प्रतिभा और बुद्धि कौशल व साहस एवं रणकौशल से कठिन-कठिन परिस्थितियों से निजात पा लेता है। प्राकृत साहित्य के माध्यम से ही हम यह जानकर व्यापारकौशल पा सकते हैं।- यथा देशाटन का वर्णन कुवलमालाकहा व णायकुमारचरिउ में देखा जा सकता है।

उक्त विन्दुओं के अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्य बहुमूल्यों विषयों की जानकारी भी हो सकेगी।

Note- पाठ्यक्रम में चतुर्थ सेमेस्टर के कोड PKT9118T के अथवा में PKT9119S पत्र चयन करने का प्रावधान है। विद्यार्थी PKT9119S (लघु शोध प्रबन्ध) का चयन करता है तो उसे सम्बन्धित विषय पर लघु शोध प्रबन्ध अथवा इन्टर्नशिप अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ का प्राकृत से हिन्दी अनुवाद किया जा सकेगा जिसका मूल्यांकन परीक्षक 80 अंकों से करेगा तथा विभागीय संकाय सदस्य के मध्य 20 अंकों की मौखिक परीक्षा विभाग में आयोजित की जायेगी।

Level	Sem	Course Type	Course Code	Course Title	Delivery Type			Total Hours	Credit	Internal Assessment	EoS Exam	M.M.
					Lecture	Tutorial	Practical					
8	I	DCC	PKT8000T	प्राकृत भाषा-साहित्य की परम्परा व इतिहास	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8001T	अर्द्धमागधी एवं प्राकृत कवि	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8002T	शौरसेनी प्राकृत	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8003T	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8004T	प्रकरण एवं पालि	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8005T	जैनधर्म, दर्शन एवं महात्मा गांधी	L	T	-	60	4	20	80	100
	II	DCC	PKT8006T	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8007T	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8008T	अर्द्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8009T	महाराष्ट्री प्राकृत	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8010T	जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम	L	T	-	60	4	20	80	100
		GEC	PKT8100T	भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला	L	T	-	60	4	20	80	100
			PKT8101T	जैन एवं बौद्ध वाङ्मय में भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ								

Level	Sem.	Course Type	Course Code	Course Title	Delivery Type			Total Hours	Credit	Internal Assessment	EoS Exam	M.M.	Remarks
					Lecture	Tutorial	Practical						
9	III	DCC	PKT9011T	पाण्डुलिपि विज्ञान	L	T		60	4	20	80	100	
			PKT9012T	प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा	L	T		60	4	20	80	100	
		DSE –I	PKT9102T	जैन आगम, ध्यान एवं योग	L	T		60	4	20	80	100	
			PKT9103T	जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान									
		DSE –II	PKT9104T	जैन सिद्धान्त एवं दर्शन	L	T		60	4	20	80	100	
			PKT9105	प्राकृत काव्य साहित्य-मीमांसा									
		DSE –III	PKT9106T	जैन धर्म, समाज एवं संस्कृति	L	T		60	4	20	80	100	
			PKT9107T	जैनाचार का समाजशास्त्रीय अध्ययन									
		GEC	PKT9108T	**भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्राकृत**	**L**	**T**		**60**	**4**	**20**	**80**	**100**	
			PKT9109T	**भारतीय दार्शनिक परम्परा एवं जैनदर्शन**	**L**	**T**		**60**	**4**	**20**	**80**	**100**	

IV	DCC	PKT9013T	प्राकृत शिलालेख एवं छंद	L	T		60	4	20	80	100	
	DSE - IV	PKT9110T	प्राकृत भाषा विज्ञान	L	T		60	4	20	80	100	
		PKT9111T	समकालीन प्राकृत साहित्य									
	DSE - V	PKT9112T	जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य	L	T		60	4	20	80	100	
		PKT9113T	पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन विधि									
	DSE - VI	PKT9114T	जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा	L	T		60	4	20	80	100	
		PKT9115T	प्राकृत आगम साहित्य -शौरसेनी आगम									
	DSE - VII	PKT9116T	जैन कला एवं स्थापत्य	L	T		60	4	20	80	100	
		PKT9117T	प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ									
	DSE - VIII	PKT9118T	प्राकृत के प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ	L	T		60	4	20	80	100	
		PKT9119S	लघु शोध प्रबन्ध			P	30×4 =120 Hrs					For Regular Sutdent Only

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8000T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परंपरा एवं इतिहास
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा के सामान्य अर्थ, प्राचीनता तथा वैदिक एवं आधुनिक भाषाओं के अन्तःसम्बन्ध को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्राकृत के रूपगठन और व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी प्राकृत भाषा एवं साहित्य की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 2. विद्यार्थियों में प्राचीन भाषाओं का ज्ञान विकसित होगा। 3. विद्यार्थी ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 4. विद्यार्थियों में प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय, महत्ता एवं उसकी प्राचीनता के संदर्भ	12
इकाई - II	भारतीय भाषाएँ वैदिक एवं आधुनिक और प्राकृत का अन्तःसम्बन्ध एवं वैशिष्ट्य, प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों के रूपगठन के नियम एवं वैशिष्ट्य	12
इकाई - III	प्राकृत भाषा के भेद-प्रभेद, प्राकृत साहित्य की विविधता का परिचयात्मक विश्लेषण, प्राकृत शिलालेखों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा- स्वरूप एवं वैशिष्ट्य	12
इकाई - IV	आगम साहित्य का सर्वेक्षण: आगमिक परिचय, वाचनाएँ, आगमिक व्याख्या साहित्य- अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी आगमिक व्याख्या ग्रन्थ	12
इकाई - V	प्राकृत रचनानुवाद एवं अभ्यास: कारक/ विभक्ति रचना (संज्ञा एवं सर्वनाम प्रयोग), क्रियारूप एवं कृदन्त के प्रयोग-रचना एवं अभ्यास	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग 1 - पं. बेचरदास दोशी, पार्श्वनाथ विद्याआश्रम शोध संस्थान, वाराणसी- 1989 2. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर – 2012 3. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981 4. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ. आर. पिशेल (हिंदी संस्करण) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना – 1958 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी- 2014 6. प्राकृत भाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएँ – संपादन - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - 2022 7. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 8. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 9. जैन धर्म - आचार्य सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली –	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8001T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा जैनाचार और आगम साहित्य की सामान्य जानकार अर्थ□ प्राचीनता तथा वैदिक एवं आधुनिक भाषाओं के अन्तःसम्बन्ध को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त अर्धमागधी–प्राकृत के रूपगठन और व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा। इसके साथ–साथ प्रमुख जैन आगम एवं आगमेतर आचार्यों/प्राकृत रचनाकारों के जीवन–परिचय से अवगत कराया जायेगा। इस तरह प्राकृत व्याकरण के अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा एवं इस भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे□ 2. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 3. विद्यार्थियों में अर्धमागधी प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी। 4. प्राकृत काव्य परंपरा एवं उसके रचनाकारों का ज्ञान हो सकेगा□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुत स्कन्ध) प्रथम अध्ययन, सत्थपरिण्णा का अर्थ एवं समीक्षा	12
इकाई - II	आचारांग सूत्र - द्वितीय अध्ययन लोकविजय का अर्थ एवं समीक्षा	12
इकाई - III	णायधम्मकहा - पांचवां थावच्चापुत्त अध्ययन एवं सातवां रोहिणी अध्ययन	12
इकाई - IV	प्राकृत आगम प्राकृत के प्रमुख कवि: महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवेन्द्रगणि	12
इकाई - V	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन, संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण	12
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी - 1961 2. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर - 2012 3. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981 4. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ. आर. पिशेल (हिंदी संस्करण) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना - 1958 5. आगम युग का जैन दर्शन - पं. दलसुख मालवणिया, प्राकृत भारती, 1990 6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 7. आयारो - जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.) 8. आचारांग सूत्र - व्याख्या - श्री आत्माराम जी, आत्मज्ञान श्रमण शिव आगम प्रकाशन समिति, लुधियाना 2003 9. ज्ञाताधर्म कथा. यु. मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8002T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	शौरसेनी प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को जैन तत्त्वविद्या, द्रव्यमीमांसा, इन्द्रिय-कषाय-विजय तथा सप्तव्यसन त्याग का अध्ययन शौरसेनी ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान और उसके व्याकरण के नियमों का सोदाहरण प्रयोग इस पत्र के माध्यम से हो सकेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा एवं इस भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे□ 2. शौरसैनी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 3. विद्यार्थियों में शौरसैनी प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी। 4. शौरसैनी प्राकृत में रचित गाथाबद्ध काव्यग्रंथों से प्राचीन काव्य परंपरा का ज्ञान प्राप्त होगा□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) - आचार्य कुन्दकुन्द गाथा - 1-92, अनुवाद एवं समीक्षा	12
इकाई - II	द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य) - व्याख्या एवं समीक्षा	12
इकाई - III	भगवती आराधना - शिवार्य 1354 से 1433 गाथाएँ	12
इकाई - IV	शौरसेनी आगम साहित्य का सर्वेक्षण	12
इकाई - V	शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन (अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10, पृ. 383-99 तक)	12
सहायक पुस्तकें	1. प्रवचनसार, सम्पा. ए.एन.उपाध्ये (भूमिका), श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल, अगास - 2012 2. द्रव्यसंग्रह - नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 3. भगवती आराधना (भावार्थ) भाग 2, संपादन - पं. के.सी. शास्त्री, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर – 1978 4. भगवान महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग-2, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, आ. शान्तिसागर छाणी ग्रंथमाला, बुढाना, मुज्जफरनगर – 1992 5. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 6. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण - डॉ. प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली- 2001 7. जैन संस्कृति कोश - डॉ.भागचन्द जैन, भाग 1 से 3, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर 2002 8. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द जैन, आगम अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर शौरसेनी प्राकृत भाषा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - प्रो.राजा राम जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8003T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत कथा साहित्य की अतिसमृद्ध परम्परा है। इसमें लगभग चौथी–पाँचवीं शताब्दी से कथाएँ प्राकृत में लिखी जाती रहीं। कुवलयमालाकथा तथा वज्जालग्गं ग्रन्थ प्राकृत चम्पू एवं मुक्तक काव्यसाहित्य के प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं जिनका अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। काव्य के दोनों परम्पराओं के इन ग्रन्थों में विद्यमान विभिन्न मूल्यों का विश्लेषण कराया जायेगा। इसके साथ–साथ प्राकृत वाक्य रचना के नियमों और अभ्यास की जानकारी विद्यार्थियों को दी जायेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी कथाकाव्य ग्रंथों में प्रयुक्त महाराष्ट्री प्राकृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करेंगे□ 2. कुवलयमाला के चम्पूकाव्यत्व का अधिगम करेंगे□ 3. वज्जालग्गं के अध्ययन से जीवन मूल्यों की समझ विकसित होगी□ 4. प्राकृत से मातृभाषा और मातृभाषा से प्राकृत में वाक्यों की संरचना का ज्ञान प्राप्त करेंगे□ 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे□

	पाठ्यक्रम	Study Hours 60
इकाई - I	कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1-12 तक	12
इकाई - II	वज्जालग्गं की 50गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद, सम्पा. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य - डॉ.के.सी.सोगानी, गाथा 1-20 एवं गाहारयणकोस मुक्तक काव्य का सामान्य परिचय	12
इकाई - III	पठित ग्रन्थों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - IV	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 1 से 41 तक का अभ्यास, आठ वाक्यों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद पूछना	12
इकाई - V	प्राकृत की परम्परा का परिचय (प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)	12
सहायक पुस्तकें	1. कुवलयमाला भाग-2, सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, मुंबई – 1970 2. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन - प्रो. डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार 1975 3. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 4. जैन धर्म - आचार्य सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली 5. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 2015 गाहारयणकोस, जिनेश्वरसूरी, सम्पा. अनु. डॉ. सुमत कुमार जैन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली. २०१८	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8004T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	प्रकरण एवं पालि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत नाट्यशास्त्र का अध्ययन प्रकरण ग्रन्थ मृच्छकटिकम् के आधार पर कराया जायेगा। मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त विभिन्न प्राकृतों के ज्ञान से विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे। पालि साहित्य और भाषा की सामान्य जानकारी के साथ–साथ बौद्ध त्रिपिटक के ग्रन्थ धम्मपद के द्वारा अहिंसा अप्रमाद जैसे मूल्यों का अध्ययन इस पत्र के माध्यम से हो सकेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी भारतीय नाट्य परम्परा और मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त बहुविध प्राकृत भाषाओँ का ज्ञान प्राप्त करेंगे□ 2. विद्यार्थियों में मृच्छकटिकम् के अध्ययन से लोगों के सामान्य जीवन में प्रयोग किये जाने वाली जनभाषा प्राकृत की समझ विकसित होगी□ 3. पालि साहित्य और भाषा की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे□ 4. धम्मपद के अध्ययन से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति समझ बढ़ेगी□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	मृच्छकटिक - महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8वां (प्राकृत अंश मात्र गद्य एवं पद्य)	12
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण	12
इकाई - III	धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)	12
इकाई - IV	पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय	12
इकाई - V	पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन (मृच्छकटिक एवं धम्मपद)	12
सहायक पुस्तकें	1. महाकवि शूद्रक - डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1967 2. धम्मपद - डा. सत्य प्रकाश शर्मा, प्रकाशक साहित्य भण्डार, मेरठ – 2012 3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1961 5. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डा. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर इन्ट्रोडक्शन, 6. मृच्छकटिक एक आलोचनात्मक अध्ययन - डॉ. सुषमा, इंडो विजन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद - 1985 7. पालि साहित्य का इतिहास - भरत सिंह उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग – 2008 8. मृच्छकटिकम् - व्याख्या - डॉ. जयशंकरलाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी – 2021 स्टडी ऑफ मृच्छकटिकम् - डॉ. जी. वी. देवस्थली	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8005T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	जैनधर्म दर्शन एवं महात्मा गाँधी
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत साहित्य में जैनधर्म–दर्शन का विवेचन सर्वत्र किया गया है। अहिंसा समता की अवधारणा का सामाजिक पक्ष और श्रमणधर्म की चर्या का विवेचन इस पत्र में किया गया है विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में इनका अध्ययन कर सकेंगे। अनेकान्त जैनदर्शन का प्राण है जो वस्तुस्वरूप का सम्यक् विश्लेषण कराना सिखाता है। इससे भी विद्यार्थी लाभान्वित होगें। गाँधी–चिन्तन के अन्तर्गत उनके जीवनदर्शन, ईश्वरवादी चिन्तन सत्य की मीमांसा और उनके सामाजिक सरोकारों का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांत अनेकांतवाद, समता एवं अहिंसा की समझ विकसित होगी□ 2. गाँधी–चिन्तन के अन्तर्गत उनके जीवनदर्शन का अध्ययन कर महात्मा गांधी के अवदान को जान पाएंगे□डी गाँधी के ईश्वरवादी चिन्तन, सत्य की मीमांसा और उनके सामाजिक सरोकारों को जान पाएंगे□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैन धर्म, दर्शन का परिचय एवं विश्लेषण - अहिंसा, पंच महाव्रत, अनेकान्तवाद, समता एवं उसका स्वरूप	12
इकाई - II	भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का प्रभाव	12
इकाई - III	महात्मा गाँधी का जीवन परिचय एवं गांधीवादी विचार - ईश्वर, सत्य, अहिंसा, पर्यावरण विज्ञान	12
इकाई - IV	महात्मा गांधी पर जैन धर्म का प्रभाव	12
इकाई - V	महात्मा गांधी के विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, जीवराज जैन ग्रंथमाला, सोलापुर – 1963 2. जैन धर्म - आ. सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली 3. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल 1975 4. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेम सुमन जैन, साहित्य निकेतन, जयपुर - 2022 5. गांधी और मानवता का भविष्य - प्रो. रामजी सिंह, मानक प्रकाशन 1997 6. गांधी दृष्टि - प्रो. रामजी सिंह – अर्जुन प्रकाशन, 2010 7. अहिंसा की बोलती मीनारें - राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री, सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा – 1968 8. जैन धर्म - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 9. जैन धर्म, दर्शन - डॉ. रमेश चन्द्र जैन 10. गांधी, गीता एवं जैन धर्म - प्रो. सागरमल जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8006T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत कथा साहित्य अतिसमृद्ध है। प्राकृत में लगभग चौथी–पाँचवीं शताब्दी से कथाएँ लिखी जाती रहीं। समराइच्चकहा प्राकृतकथा साहित्य का एक प्रमुख ग्रन्थ हैं जिसका भाषात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इस्ससे विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में प्राकृत साहित्य की विविध विधाओं की समझ विकसित होगी। 2. कथाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों की रूचि जागृत होगी। 3. समराइच्च कहा के माध्यम से जीवन जीने की कला की समझ होगी। 4. विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	समराइच्चकहा (प्रथम भव) सम्पादक- डॉ. रमेशचन्द्र जैन साहित्य भण्डार, मेरठ	12
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - III	प्राकृत कथा साहित्य की समीक्षा	12
इकाई - IV	प्राकृत चरित साहित्य की समीक्षा	12
इकाई - V	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ. के.सी.सोगानी) के पाठ 42 से 84 का अभ्यास, किन्हीं आठ वाक्यों का हिन्दी से प्राकृत में अनुवाद पूछना	12
सहायक पुस्तकें	1. समराइच्चकहा (पढमो भव), राष्ट्रिय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला, कर्णाटक – 2015 2. समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. झिनकू यादव, भारतीय प्रकाशन, वाराणसी – 1977 3. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन - डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार – 1965 4. वृहत्कथाकोश - सम्पा. - डॉ. ए.एन.उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, वाराणसी – 1942 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 6. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डॉ. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर इन्ट्रोडक्शन 7. प्राकृत स्वयं शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 2015 8. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 9. बाल रूप प्राकृत - डॉ. उदय चन्द्र जैन, मरुधर केसरी, साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर – 1999 प्राकृत का जैन कथा साहित्य - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8007T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृतसाहित्य में सट्टकों का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्पूरमंजरी प्राकृत सहित्य की सट्टक विधा का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसका भाषात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत के विविध रूपों मागधी एवं शौरसैनी की विशेषताओं के बारे में अध्ययन करेंगे एवं प्राकृत व्याकरण का अध्ययन भी इस पत्र के द्वारा किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1) सट्टक के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्यिक रूचि जागृत होगी। 2) कर्पूरमंजरी के अध्ययन से साहित्य की सौन्दर्यानुभूति प्रकट होगी। 3) विद्यार्थियों में प्राकृत व्याकरण की समझ विकसित होगी। 4) विद्यार्थियों को प्राकृत साहित्य विविध विधाओं के अध्ययन से प्राकृत साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	कर्पूरमंजरी राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य) सम्पा. डॉ. रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974	12
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण	12
इकाई - III	सट्टक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - IV	हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं. 287-302 (प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है।	12
इकाई - V	मागधी प्राकृत एवं शौरसेनी प्राकृत की प्रमुख विशेषतायें	12
सहायक पुस्तकें	1. कर्पूरमंजरी, साहित्य भण्डार, मेरठ – 2016 2. आचार्य राजेशखर - डॉ. श्यामवर्मा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल – 1971 3. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र 4. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 5. प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदयचन्द्र जैन, , प्राकृत, आगम एवं अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर, 2002 ई 6. प्राकृत प्रवेशिका - डॉ. कोमल चंद जैन, तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी – 2013 7. सिद्धहेमशब्दानुशासन (प्राकृत व्याकरण की हिन्दी व्याख्या सहित) - श्री प्यारचन्द जी महाराज	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8008T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	अर्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राकृत आगम साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। आगमों के अंतर्गत उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को शिक्षा एवं विनम्रता का ज्ञान होगा। अर्धमागधी आगमों में प्रयुक्त भाषा को जानेंगे। भाषा के अध्ययन के लिए प्राकृत व्याकरण के संज्ञा, क्रिया और कृदन्त का अध्ययन भी इस पत्र में करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन से शिक्षा एवं विनम्रता जैसे मूल्यों की समझ विकसित होगी। 2. अर्धमागधी आगमों में प्रयुक्त भाषा का ज्ञान होगा। अर्धमागधी प्राकृत के रूपगठन के लिए संज्ञा, क्रिया और कृदंतों की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	उत्तराध्ययन सूत्र - नमिप्रवज्या (1 से 62 गाथाएँ)	12
इकाई - II	उत्तराध्ययन सूत्र - विनय अध्ययन (1 से 20 गाथाएँ) केशी गौतम अध्ययन का मूल्यांकन	12
इकाई - III	अर्द्धमागधी साहित्य का सर्वेक्षण	12
इकाई - IV	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण सहित विवेचन	12
इकाई - V	अपभ्रंश के प्रमुख कविः स्वयंभू, पुष्पदन्त, वीरकवि, धनपाल, रइधू आदि के योगदान एवं उनके ग्रन्थों पर सामान्य प्रश्न	12
सहायक पुस्तकें	1. उत्तराध्ययन - एक समीक्षात्मक अध्ययन - आचार्य तुलसी 2. उत्तराध्ययनसूत्र - तेरापंथ महासभा - कलकत्ता 3. उत्तराध्ययनसूत्रम् - शिवमुनि 4. उत्तराध्ययन - अनु. संपा. आचार्य सुभद्र मुनि 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 6. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य का इतिहास: डॉ. एल.बी.राम अनन्त 7. भविसयत्तकथा एवं अन्य अपभ्रंश कथा काव्य - डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री 8. अपभ्रंश भाषा और साहित्य - डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - 1965 9. रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन - डॉ. राजा राम जैन, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार – 1974 10. प्राकृत काव्य सौरभ - डॉ. प्रेम सुमन जैन, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर – 2005 11. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8009T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	महाराष्ट्री प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत काव्य साहित्य के महत्त्व को जानने के लिए आख्यानमणि कोष एवं गउडवहो जैसे अद्वितीय काव्यों का इस पत्र में अध्ययन किया जायेगा। प्राकृत भाषा का एक महत्वपूर्ण भेद महाराष्ट्री प्राकृत है। इस भाषा की विशेषताओं का ज्ञान होगा तथा महाराष्ट्री प्राकृत की संरचना के लिए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और कृदंतों का भी अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों को महाराष्ट्री प्राकृत में रचित काव्यों का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत महाकाव्य गउडवहो की जानकारी होगी। 3. आख्यानमणिकोश ग्रन्थ के अध्ययन से आख्यान सम्बन्धी समझ विकसित होगी। 4. महाराष्ट्री प्राकृत की संरचना के लिए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और कृदंतों का भी ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	आख्यानकमणिकोश (आम्रदेवसूरि वृत्ति) तीसरा अधिकार 15वीं कथा रोहिण्याख्यानकम् संदर्भ ग्रंथः रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक) सम्पा. डॉ. प्रेमसुमन जैन, साहित्य संस्थान, उदयपुर	12
इकाई - II	गउडवहो (वाक्पतिराज) स. एन.जी.सुरू सन्दर्भ पुस्तिकाः वाक्पतिराज की लोकानुभूति, गाथाएं 1-50 संकलन- डॉ. के.सी.सोगानी, जयपुर-1983	12
इकाई - III	पठित ग्रन्थों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - IV	महाराष्ट्री प्राकृत का परिचय एवं विशेषताएँ	12
इकाई - V	महाराष्ट्री प्राकृत भाषा की व्याकरण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम	12
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 2. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डॉ. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 2015 ई. 3. गोडवहो, महाकवि वक्पतिराज, सम्पादक- डॉ मिथेलेश कुमारी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, अहमदाबाद, 2002 4. आख्यानमणि कोश , नेमिचन्द्रसूरी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, अहमदाबाद, 2002 5. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर, 2017 ई. 6. जैन संस्कृति कोष भाग 1 से 3 - प्रो. भाग चन्द्र जैन, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर – 2002 7. प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द्र जैन, प्राकृत, आगम एवं अहिंसा शोध संसथान, उदयपुर, 2002 ई.	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8010T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकान्तवाद की उपयोगिता एवं जैनाचार पद्धति का अध्ययन करेगे। जैनदर्शन के सिद्धांतों का भारतीय दार्शनिक परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करेंगे साथ ही जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्व और उनकी महत्ता का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकान्तवाद की व्यावहारिकता और प्रयोगात्मकता की समझ विकसित होगी। 2. जैनाचार पद्धति का अध्ययन से मनुष्य के जीवन में नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान की जानकारी होगी। 3. जैनदर्शन के गुणस्थान, नय, निक्षेप आदि सिद्धांतों का भी ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैनविद्या के प्रमुख सिद्धान्त एवं दार्शनिक परम्परा - प्राचीनता एवं विविधता	12
इकाई - II	जैन दर्शन में गुणस्थान, अनेकान्त की पृष्ठभूमि एवं सापेक्षवाद का तुलनात्मक अध्ययन, अनेकान्त एवं भाषा दर्शन, अनेकान्त की व्यवहार्यता।	12
इकाई - III	जैन दर्शन में नय एवं निक्षेप की तात्त्विक पृष्ठभूमि, वचनव्यापार का नियामक - स्याद्वाद : सिद्धान्त एवं स्वरूप, सप्तभंग तथा उसकी समसामयिकता का विश्लेषण	12
इकाई - IV	जैनाचार: श्रमणाचार का वैशिष्ट्य (महाव्रत, मूलगुण, समिति, ध्यान एवं तप) एवं श्रावकधर्म का वैशिष्ट्य (अणुव्रत दर्शन, प्रतिमाएँ, सप्तव्यसन-त्याग)	12
इकाई - V	जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्वों की महत्ता	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, 2012 ई 2. जैन धर्म - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 3. जैन धर्म - आ. सुशील मुनि 4. जैन धर्म, दर्शन - डॉ. रमेश चन्द्र जैन 5. जैन धर्म - डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री 6. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेम सुमन जैन 7. तत्त्वार्थसूत्र - पं. सुखलाल सिंघवी 8. जैन दर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रंथमाला, काशी - 1966 9. जैन दर्शन: मनन और मीमांसा - मुनि नथमल 10. जैन धर्म-दर्शन - डॉ. मोहन लाल मेहता 11. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1965	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8100T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	जी.ई.सी. (Generic Elective Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला का अध्ययन जैन एवं बौद्ध सन्दर्भों के माध्यम से करेंगे, साथ ही महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय एवं बुद्धकालीन भारतीय परिस्थितियों का विशिष्ट अध्ययन करेंगे। बौद्धदर्शन के सिद्धांतों - चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा का अध्ययन करेंगे, साथ ही बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव, मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता का अध्ययन करेंगे। जैनसंस्कृति, सिद्धांत एवं आचार-पद्धति के अध्ययन से मनुष्य के जीवन में नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान की जानकारी होगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला की समझ विकसित होगी। 2. बौद्ध के चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, शील, समाधि एवं प्रज्ञा आदि का ज्ञान होगा। 3. महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय एवं बुद्धकालीन परिस्थितियों का ज्ञान होगा। 4 .बौद्ध धर्म की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	महावीर एवं बुद्धकालीन भारतीय परिस्थिति, महात्मा बुद्ध का जीवन–परिचय	12
इकाई – II	रत्नत्रय, चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, अणुव्रत संहिता	12
इकाई – III	अनेकांत, प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा	12
इकाई – IV	जैन एवं बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव	12
इकाई – V	जैन एवं बौद्ध धर्म - मूर्ति एवं स्थापत्य कला	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म – डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, 2012 ई. 2. बौद्ध संस्कृति का इतिहास – प्रो. भाग चन्द्र जैन, आलोक प्रकाशन, नागपुर, 2012 ई. 3. बौद्ध दर्शन – राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, नई दिल्ली, 2022 ई. 4. बौद्ध दर्शन – बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 5. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1–2, भरतसिंह उपाध्याय, बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता- 1956 6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन, राजस्थान संस्कृति संस्थान, 2004 ई. 7. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा एवं मन्दिर – वासुदेव उपाध्याय, विहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972 ई. 8. जैन कला एवं स्थापत्य, अमला नन्द घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1971 ई. भाग 1-3 9. जैन प्रतिमा विज्ञान, मारुति नंदन तिवारी, पार्श्वनाथ विद्या आश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1971 ई.	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8101T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	जैन एवं बौद्ध वाङ्मय में भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	जी.ई.सी. (Generic Elective Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में जैन एवं बौद्ध साहित्य में अंकित भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक सन्दर्भों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैन एवं बौद्ध साहित्य के आधार से भारतीय संस्कृति और ऐतिहासिक सन्दर्भों की समझ विकसित होगी। 2. जैन एवं बौद्ध की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	महावीर एवं बुद्ध से पूर्व भारतीय संस्कृति	12
इकाई - II	महावीर एवं बुद्धकालीन भारतीय संस्कृति	12
इकाई - III	जैन एवं बौद्ध ग्रंथों में ऐतिहासिक सन्दर्भ	12
इकाई - IV	जैन एवं बौद्ध मूर्ति एवं स्थापत्य कला में अंकित भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ	12
इकाई - V	जैन एवं बौद्ध धर्म - मूर्ति एवं स्थापत्य कला के ऐतिहासिक सन्दर्भ	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म – डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, 2012 ई. 2. बौद्ध संस्कृति का इतिहास – प्रो.भाग चन्द्र जैन, आलोक प्रकाशन, नागपुर, 2012 ई. 3. बौद्ध दर्शन – राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, नई दिल्ली, 2022 ई. 4. बौद्ध दर्शन – बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 5. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1-2, भरतसिंह उपाध्याय, बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता- 1956 6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन, राजस्थान संस्कृति संस्थान, 2004 ई. 7. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा एवं मन्दिर – वासुदेव उपाध्याय, विहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972 ई. 8. जैन कला एवं स्थापत्य, अमला नन्द घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1971 ई. भाग 1-3 9. जैन प्रतिमा विज्ञान, मारुति नंदन तिवारी, पार्श्वनाथ विद्या आश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1971 ई.	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9011T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	**पाण्डुलिपि विज्ञान**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को पाण्डुलिपि का सामान्य अर्थ एवं स्वरूप, उसके स्रोत एवं संरक्षण-संवर्धन की प्रवृतियों का ज्ञान होगा। इसके अतिरिक्त वर्ण और शब्द संरचना एवं लिपि के भेद व प्राचीनता का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थी पाण्डुलिपि की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 6. विद्यार्थियों में प्राचीन पाण्डुलिपियों का ज्ञान विकसित होगा। 7. विद्यार्थी ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 8. विद्यार्थियों में संरक्षित प्राचीन विरासत की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त- 1. पाण्डुलिपि विज्ञान का स्वरूप एवं महत्त्व 2. पाण्डुलिपि की रचना-प्रक्रिया एवं चिन्ह	12
इकाई - II	1. पाण्डुलिपि प्राप्ति विवरण बाह्य एवं अंतरंग परिचय 2. लिपि के प्रकार (ब्राह्मी, देवनागरी आदि)	12
इकाई - III	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त 1. वर्ण-विकार एवं शब्द अर्थ की समस्या 2. पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ-निर्माण	12
इकाई - IV	1. काल-निर्धारण के प्रमुख आधार 2. प्रमुख ग्रन्थ - भण्डारों का परिचय एवं महत्त्व	12
इकाई - V	1. पाण्डुलिपि ग्रन्थों का संरक्षण एवं विभिन्न पाण्डुलिपि ग्रन्थसूचियों का परिचय 2. प्रमुख प्रकाशित ग्रन्थ भण्डारों के केटलॉग का परिचय	12
सहायक पुस्तकें	1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला - डा. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश', प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, 1979 2. पाण्डुलिपि विज्ञान - डा. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1978 3. पाठालोचन की भूमिका - डॉ. एस.एम. कत्रे 4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान - डा. महावीर प्रसाद जैन, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2003 5. भारतीय पुरालिपि विद्या - डा. कृष्णदत्त वाजपेयी 6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डा. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247-296) 7. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, अजमेर, 1918 8. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास (भाग 5), पं.अम्बालाल शाह, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वनारस, 2005	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9012T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	**प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थी प्राकृत भाषा एवं व्याकरण के सूत्र व नियम तथा अपभ्रंश व्याकरण एवं चरितकाव्यों के स्वरूप को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के शब्द रूपगठन एवं कृदन्तों से अवगत कराया जायेगा। इस तरह प्राकृत व्याकरण के अभ्यास के माध्यम से प्राकृत वाक्य रचना से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा एवं व्याकरण का सूत्रों के माध्यम से अध्ययन कर पाएंगे□ 6. प्राकृत भाषा में प्रयुक्त अव्यय, संधि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोग की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 7. विद्यार्थियों में अपभ्रंश भाषा की समझ विकसित होगी। 8. अपभ्रंश चरितकाव्य परंपरा एवं उसके रचनाकारों का ज्ञान हो सकेगा□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	हेमशब्दानुशासन के तृतीय पाद के सूत्र 1-42 एवं 58-182 सूत्रों की सोदाहरण हिन्दी व्याख्या। इसके लिए -प्राकृत व्याकरण के संज्ञा एवं सर्वनाम से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से आठ सूत्रों को देकर चार की व्याख्या पूछना	12
इकाई - II	प्राकृत व्याकरण के अव्यय, सन्धि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोग से सम्बन्धित सोदाहरण नियम लिखना	12
इकाई - III	अपभ्रंश व्याकरण एवं चरित काव्य, अपभ्रंश व्याकरण के प्रमुख नियम (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम)	12
इकाई - IV	णायकुमारचरिउ, प्रथम संधि	12
इकाई - V	प्राकृत भाषा में निबन्ध लेखन (अणुसासणं, माया मित्ताणि णासइ, अहिंसा, मेत्ती, मज्झ पिय-पोत्थअं/कवि, दीवाली)	12
सहायक पुस्तकें	1. हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर 2. हेम प्राकृत व्याकरण, डा. उदय चन्द्र जैन, 1983 3. हेमचन्द्र का शब्दानुशासन : एक अध्ययन - डा. नेमि चन्द शास्त्री 4. प्राकृतमार्गोपदेसिका - पं. बेचरदास दोशी 5. अपभ्रंश काव्यधारा - डा. जैन एवं डा. शर्मा, अहमदाबाद 6. णायकुमारचरिउ - डा. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 1990 7. प्राकृत व्याकरण - डा. उदय चन्द्र जैन 8. प्राकृत स्वयं शिक्षक- डा. प्रेम सुमन जैन (तृतीय आवृत्ति), □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□, 2003 9. प्राकृत रचनोदय - डा. उदय चन्द्र जैन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, नईदिल्ली, 2007 10. अपभ्रंश का जैन साहित्य एवं जीवन-मूल्य - साध्वी डा. साधना 11. अपभ्रंश रचना सौरभ - डा. के. सी. सोगानी	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9102T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III A
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन आगम, ध्यान एवं योग**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थियों को जैन आगम] ध्यान एवं योग का स्वरूप एवं विश्लेषण का अध्ययन प्राकृत आगम ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान और जैन ध्यान एवं योग के सिद्धान्त एवं प्रक्रिया की जानकारी इस पत्र के माध्यम से हो सकेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे। 6. प्राकृत साहित्य में वर्णित ध्यान और योग की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे। 7. विद्यार्थियों में जैन परम्परा में प्रचलित ध्यान व योग के सिद्धान्त एवं प्रक्रिया की समझ विकसित होगी। 8. प्राचीन प्राकृत आगम परंपरा का ज्ञान प्राप्त होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	अर्द्धमागधी आगम, सूत्रकृतांग (प्रथम समय अध्ययन 83 गाथाएँ)	12
इकाई – II	उपासकदशांगसूत्र – प्रथम आनन्द श्रावक अध्ययन	12
इकाई – III	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई – IV	जैन ध्यान – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, भेद–प्रभेद	12
इकाई – V	जैन योग – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, व्याख्या	12
सहायक पुस्तकें	1. सूत्रकृतांग सूत्र - सं. मुनि मधुकर (हिन्दी व्याख्या सहित) 2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वनारस, 2005 3. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डा. जगदीश चन्द्र जैन 5. जैन साधना पद्धति में ध्यान योग - डा. साध्वी प्रियदर्शना 6. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन - डा. अर्हतदास डिगे 7. ध्यान एक दिव्य साधना - आ. डा. शिवमुनि 8. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग - साधना का समीक्षात्मक अध्ययन - डा. सुव्रत मुनि शास्त्री 9. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप - डा. सीमा रानी शर्मा 10. योग मनन और संस्कार - आ. शिवमुनि 11. ध्यान विचार - आ. कलापूर्णसूरि 12. उपासकदशांग - साध्वी डा. स्मृति 13. सूत्रकृतांग का दार्शनिक अध्ययन - डा. नीलांजना श्री 14. ध्यान का स्वरूप - डा. हुकम चंद भारिल्ल 15. श्रावक धर्मदर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9103T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III B
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	जैनधर्म की परम्परा अतिसमृद्ध है। इस परम्परा के साहित्य में अंकित जैन योग के माध्यम से बाह्य शुद्धि एवं अन्तरंग शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिसका अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। साथ ही विभिन्न योगपरक मूल्यों का विश्लेषण कराया जायेगा। योग के विभिन्न नियमों और अभ्यास की जानकारी विद्यार्थियों को दी जायेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. **विद्यार्थी जैन ग्रंथों में आगत योग की सूक्ष्मता का ज्ञान प्राप्त करेंगे।** 2. जैन योग और उसके माध्यम से स्वास्थ विज्ञान का अधिगम करेंगे। 3. जैनाचार-आहार संयम और स्वास्थ विज्ञान की समझ विकसित होगी। 4. जैन योग का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	ध्यान शतक (जिनभद्रगणि) सम्पूर्ण	12
इकाई – II	जैन योग की परम्परा, विकास एवं भेद–प्रभेद तथा पठित ग्रन्थ पर आलोचनामत्क प्रश्न	12
इकाई – III	जैन परम्परा में ध्यान एवं योग का सम्बन्ध, स्वास्थ्यविज्ञान एवं योग की प्राचीन परम्परा	12
इकाई – IV	जैनाचार–आहार संयम एवं स्वास्थ्य का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक आधार, यौगिक क्रियाएं और स्वास्थ्य–चिन्तन, स्वास्थ्य–निर्माण एवं समाज–संरचना में जैन योग का प्रभाव,	12
इकाई – V	जैन योग की समसामयिक व्यवहार्यता, जैन योग का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व	12
सहायक पुस्तकें	1. ध्यान शतक (जिनभद्रगणि), वीर सेवा मंदिर, नई दिल्ली 2. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री 3. जैन साधना पद्धति में ध्यान योग - डा. साध्वी प्रियदर्शना 4. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन - डा. अर्हतदास डिगे 5. ध्यान एक दिव्य साधना - आ. डा. शिवमुनि 6. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग - साधना का समीक्षात्मक अध्ययन - डा. सुव्रत मुनि शास्त्री 7. अनेकान्त से स्वास्थ्य समृद्धि एवं शान्ति, प्रो. पारसमल अग्रवालए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर, 2007 8. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप - डा. सीमा रानी शर्मा 9. योग मनन और संस्कार - आ. शिवमुनि 10. प्राकृत साहित्य के व्यावहारिक पक्ष, डॉ. ज्योति बाबू, भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी, उदयपुर, 2019 11. उपासकदशांग - साध्वी डा. स्मृति 12. श्रावक धर्मदर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि 13. जैन विज्ञान, आचार्य सुनीलसागर जी महाराज	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9104T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV A
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन सिद्धान्त एवं दर्शन**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	जैनधर्म-दर्शन का विशेष महत्त्व है। इस पत्र से विद्यार्थियों को अनेकान्त सिद्धान्त का अध्ययन सन्मतिसूत्र नामक प्राकृत ग्रन्थ के माध्यम से कराया जायेगा।। दशवैकालिक सूत्र के अध्ययन से साधु के आचरण की सूक्ष्मता का ज्ञान हो सकेगा। विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में इसके प्रमुख सिद्धान्त- अनेकान्त और स्याद्वाद आदि का अध्ययन कर सकेंगे। अनेकान्त जैनदर्शन का प्राण है जो वस्तुस्वरूप का सम्यक् विश्लेषण कराना सिखाता है। इससे भी विद्यार्थी लाभान्वित होगें। जैनदर्शन के सत्ता स्वरूप एवं कर्म-सिद्धान्त आदि की मीमांसा और उनके सांस्कृतिक मूल्यांकन का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी भारतीय ज्ञान में अनेकान्त सिद्धान्त की भूमिका का ज्ञान प्राप्त करेंगे। 2. विद्यार्थी दशवैकालिकसूत्र में वर्णित दृष्टान्तों के माध्यम से दार्शनिक सिद्धान्त एवं आचरण पद्धति का ज्ञान व समझ हो सकेगी। 3. भारतीय दर्शन परम्परा में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	सम्मइसुत्तं, सिद्धसेन, (तीसरा अनेकान्त खण्ड) गाथा 1-70 एवं समीक्षा	12
इकाई - II	दशवैकालिक सूत्र (1 से 4 अध्ययन)	12
इकाई - III	जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्त, स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद का विवेचन	12
इकाई - IV	जैनदर्शन की समीक्षा- सत्- स्वरूप, सप्ततप्व एवं कर्म सिद्धान्त	12
इकाई - V	जैन साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन- समाज, दर्शन, कला एवं शिक्षा आदि की दृष्टि से जैन साहित्य का मूल्यांकन	12
सहायक पुस्तकें	1. सन्मतिसूत्र (हिन्दी अनुवाद) - डा. देवेन्द्र कुमार शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ,नईदिल्ली, 2003 2. दशवैकालिक - मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन, ब्यावर 3. तत्त्वार्थसूत्र - पं. सुखलाल सिंघवी, 4. जैनदर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन "न्यायाचार्य" 5. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा - मुनि नथमल, 6. जैन धर्म-दर्शन - डा. मोहन लाल मेहता 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा. जगदीश चन्द्र जैन 8. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन - डा. प्रेम सुमन जैन 9. ए क्रिटीकल स्टडीज आफ पउमचरियं - डा. के. आर. चन्द्रा 10. स्टडीज इन भगवती सूत्र - डा. जे. सी .सिकदर 11. दशवैकालिक - आचार्य आत्माराम जी म. सा.	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9105T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV B
पाठ्यक्रम का नाम	**प्राकृत काव्य साहित्य-मीमांसा**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत काव्य साहित्य अतिसमृद्ध है। इस पत्र से विद्यार्थी प्राकृत साहित्य का अध्ययन कुम्मापुत्तचरियं**,** पउमचरियं एवं कुमारवालपडिबोह के आधार से किया जायेगा**,** जिसका आलोचनात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इससे विद्यार्थियों को काव्य साहित्य की परम्परा, प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र से विद्यार्थियों में प्राकृत काव्य साहित्य की परम्परा, प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता की समझ विकसित होगी। 2. विद्यार्थी प्राकृत साहित्य की विविध काव्य विधाओं को जान पाएंगे।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	कुम्मापुत्तचरियं–अनन्तहंसकृत (चिन्तामणि दृष्टान्त)	12
इकाई – II	पउमचरियं (विमलसूरि) अंजना–पवनंजय कथा का मूल पाठ	12
इकाई – III	कुमारवालचरियं (द्वयाश्रय काव्य), आचार्य हेमचन्द्र (1-100 गाथाएँ)	12
इकाई – IV	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	12
इकाई – V	प्राकृत काव्य साहित्य की परम्परा, विकास एवं विविध विधाएँ और वैशिष्ट्य, प्रमुख प्राकृत–काव्यकारों और उनकी कृतियों का परिचय	12
सहायक पुस्तकें	1. कुम्मापुत्तचरियं-अनन्तहंसकृत अनुवादक - डा. जिनेन्द्र कुमार जैन 2. पउमचरियं(विमलसूरि) 3. कुमारवालचरियं - आचार्य हेमचन्द्र 4. जैन दर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन 5. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा - मुनि नथमल 6. जैन धर्म-दर्शन – डा. मोहन लाल मेहता 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा. जगदीश चन्द्र जैन 8. क्रिटीकल स्टडीज आफ पउमचरियं - डा. के. आर. चन्द्रा 10. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 6 12. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री 13. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डा. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9106T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V A
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन धर्म, समाज एवं संस्कृति**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	जैन धर्म का उद्भव एवं विकास, सामाजिक पक्ष और जैनधर्म की संघ परम्परा का विवेचन इस पत्र में किया गया है । इनका अध्ययन विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में कर सकेंगे। साथ ही जैनधर्म में नारी की स्थिति एवं जैनधर्म में पर्यावरण, शाकाहार जैसे बहुउपयोगी तथ्यों का समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थियों में जैन धर्म का उद्भव एवं विकास, सामाजिक पक्ष और जैनधर्म की संघ परम्परा की समझ विकसित होगी। 6. पर्यावरण, शाकाहार जैसे बहुउपयोगी विषयों के प्रति विद्यार्थियों की रुचि जागृत होगी। 7. जैनधर्म परिप्रेक्ष्य में सामाजिक–जीवन जीने की कला की समझ होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैन धर्म : उद्भव एवं विकास	12
इकाई - II	जैनधर्म की विशेषताएँ एवं जैन धर्म का समाज पर प्रभाव	12
इकाई - III	जैन धर्म की परम्परा - दिगम्बर एवं श्वेताम्बर	12
इकाई - IV	जैन धर्म में नारी की स्थिति	12
इकाई - V	जैन धर्म में पर्यावरण विज्ञान, शाकाहार वर्तमान युग में महत्त्व	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डा.राजेन्द्र मुनि 2. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास - डा.भाग चन्द्र जैन 3. जैनधर्म की मौलिक विशेषताएँ, डॉ. रमेश चंद जैन, आचार्य ज्ञानसागर ग्रन्थमाला, श्री दिग. जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, 2004 4. जैन धर्म - पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री 5. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा - आ.देवेन्द्र मुनि, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर, 1997 6. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो.प्रेम सुमन जैन 8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डा.हीरालाल जैन 9. आगम युग में जैन दर्शन - पं.दलसुखभाई मालवणिया 10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा.जगदीश चन्द्र जैन 11. भारतीय वाड्मय में नारी - आचार्य देवेन्द्र मुनि, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर, 2002 12. जिणधम्मो - आचार्य नानेश 13. जैन धर्म एक झलक, डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, श्रुत संवर्धन संस्थान, मेरठ, 2016	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9107T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V B
पाठ्यक्रम का नाम	**जैनाचार का समाजशास्त्रीय अध्ययन**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय समाज के विविध सामाजिक पक्षों का अध्ययन जैनधर्म के आलोक में किया जा सकेगा। साथ ही अणुव्रत, इन्द्रिय संयम, आहारशुद्धि, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों का सामाजिक संरचना में उपयोगिता की विवेचना की जायेगी। इसके अतिरिक्त अहिंसा, सत्य, समता एवं क्षमापना जैसे बहुमूल्य मौलिक जीवनमूल्यों का समाजहित में अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. अणुव्रत, इन्द्रिय संयम, आहारशुद्धि, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों के अध्ययन से विद्यार्थियों में रुचि जागृत होगी। 2. विद्यार्थियों में अहिंसा, सत्य, समता एवं क्षमापना जैसे मूल्यों का समाजहित में अध्ययन करने की समझ विकसित होगी। 3. विद्यार्थियों को विविध सामाजिक पक्षों के अध्ययन से जैनधर्म की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैनाचार : अणुव्रत दर्शन की पृष्ठभूमि, अणुव्रतों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण	12
इकाई - II	इन्द्रिय संयम एवं आहारशुद्धि की सामाजिक पृष्ठभूमि, समाज-विकास का आधार शाकाहार	12
इकाई - III	अपरिग्रह दर्शन की सार्वभौमिकता, विश्वशान्ति और सामाजिक समरसता का आधार – अपरिग्रहवाद : स्वरूप, परिणाम और विकृतियों के निवारण की जैन दृष्टि	12
इकाई - IV	अणुव्रत दर्शन के विविध आयाम : अहिंसा, सत्य की सामाजिक पृष्ठभूमि- सिद्धान्त, प्रयोग एवं विश्लेषण	12
इकाई - V	अहिंसा, समता, क्षमापना के परिप्रेक्ष्य में समाज-संरचना की जैन दृष्टि, रात्रि	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास - डा.भाग चन्द्र जैन 2. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डा.हीरालाल जैन 3. जैन धर्म-दर्शन - डा.रमेश चन्द्र जैन 4. जैन धर्म - पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री 5. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा - आ.देवेन्द्र मुनि 6. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो.प्रेम सुमन जैन 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा.जगदीश चन्द्र जैन 8. भारतीय वाड्मय में नारी - आचार्य देवेन्द्र मुनि 9. जिणधम्मो - आचार्य नानेश 10. अनेकान्त से स्वास्थ्य समृद्धि एवं शान्ति, प्रो. पारसमल अग्रवालए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर, 2007 11. अहिंसा दर्शन (एक अनुचिन्तन), डा. अनेकान्त कुमार जैन, श्रीलालबहदुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नईदिल्ली, 2016	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9108T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI A
पाठ्यक्रम का नाम	**भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्राकृत**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**GEC (Genral Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राकृत भाषा एवं साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राकृत भाषा एवं साहित्य का ज्ञान होगा। साथ ही इस पत्र में भारतीय इतिहास-पुरातत्त्व एवं प्राकृत भाषा के अन्तर्सम्बन्ध को जानने मिलेगा। भाषा के अध्ययन के लिए अपभ्रंश एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं का अध्ययन भी इस पत्र में करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राकृत भाषा एवं साहित्य की समझ विकसित होगी। 2. अपभ्रंश एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं का ज्ञान होगा। 3. भारतीय नाट्य परम्परा में प्राकृत की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	भारतीय ज्ञान परम्परा में प्राकृत का स्थान : भारतीय भाषाओं का उद्भव, परम्परा एवं प्राकृत भाषा , भारतीय भाषाओं का उद्भव, परम्परा एवं प्राकृत भाषा, प्राकृत भाषा के स्रोत व अवशेष और प्राकृत भाषा का भारतीय भाषाओं में स्थान	12
इकाई - II	भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व एवं प्राकृत भाषा : भारतीय इतिहास एवं जैनधर्म, पुरातत्त्व में जैनधर्म प्राकृत भाषा की प्राचीनता एवं उसके प्रमुख केन्द्र	12
इकाई - III	भारतीय नाट्य परम्परा में प्राकृत : भारतीय संस्कृत नाट्य परम्परा एवं प्राकृत, अश्वघोष के नाटकों में प्राकृत के तत्त्व और भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र एवं प्राकृत विधान	12
इकाई - IV	भारतीय कला एवं प्राकृत साहित्य : लेखन कला का उद्भव एवं विकास जैन साहित्य में कलाओं के सन्दर्भ : पुरुषों की 72 कला एवं स्त्री की 64 कला आदि।	12
इकाई - V	प्राकृत-अपभ्रंश एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं : आधुनिक भाषाओं के विकास में प्राकृत का योगदान प्रादेशिक भाषाएँ: हिन्दी राजस्थानी, गुजराती और अन्य आधुनिक भाषाएँ	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास - डा.भाग चन्द्र जैन 2. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डा.हीरालाल जैन 3. नाट्य शास्त्र में प्राकृत सन्दर्भ, डॉ. सुदर्शन मिश्र, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर, 2013 4. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा.जगदीश चन्द्र जैन **5.** जैन धर्म - पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री 6. प्राकत भाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएं- डा. ज्योति बाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2022 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9109S
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI B
पाठ्यक्रम का नाम	**भारतीय दार्शनिक परम्परा एवं जैनदर्शन**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**GEC (Genral Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय दार्शनिक परम्परा में जैनदर्शन का एक विशिष्ट दर्शन माना जाता है। जैनदर्शन ने मौलिक सिद्धान्तों के माध्यम से अपनी एक पहचान बना रखी है। इन मौलिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन इस पत्र में किया जायेगा। जैनदर्शन की विशेषताओं का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्याथियों को भारतीय दार्शनिक परम्परा का ज्ञान होगा। 6. भारतीय दार्शनिक परम्परा की जानकारी होगी। 7. भारतीय वैदिक, बौद्ध चार्वाक एवं जैनदर्शन के सिद्धान्त सम्बन्धी समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	भारतीय दार्शनिक चिन्तनधारा में प्रमाण : प्रमाण का स्वरूप एवं भेद समन्तभद्राचार्य, आचार्य सिद्धसेन, आचार्य अकलंक, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्राचार्य	12
इकाई - II	जैन न्याय के प्रमुख मनीषी एवं उनका साहित्य : समन्तभद्राचार्य, आचार्य सिद्धसेन, आचार्य अकलंक, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्राचार्य	12
इकाई - III	प्रमाण का लक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रमाण : जैन प्रमाण की परम्परा, स्वरूप एवं भेद और प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण व भेद	12
इकाई - IV	परोक्ष प्रमाण एवं सर्वज्ञसिद्धि : परोक्ष प्रमाण का लक्षण एवं भेद, सर्वज्ञता का स्वरूप एवं उसकी सिद्धि	12
इकाई - V	प्रमाणाभास एवं प्रमाण का विषय एवं फल	12
सहायक पुस्तकें	1. भारतीय दर्शन में आत्मा एवं परमात्मा, डॉ. वीरसागर जैन, भारतीय ज्ञानपीठ नईदिल्ली, 2009ई. 2. जैन प्रमाण शास्त्र, प्रो. धर्मचं द जैन, जयपुर 3. आगम युग में जैन दर्शन - पं.दलसुखभाई मालवणिया 4. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में प्रतिपादित दार्शनिक मीमांसा, डॉ. सुमत कुमार जैन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर, 2013ई. 5. जैन न्याय मंदिर, प्रो. वीर सागर जैन 6. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा - आ.देवेन्द्र मुनि 7. आगम युग में जैन दर्शन - पं.दलसुखभाई मालवणिया 8. जैन न्याय प्रदीपिका, प्रो. वीर सागर जैन, 9. बौद्ध दर्शन - बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 10. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1-2, भरतसिंह उपाध्याय, बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता- 1956	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9013T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	**प्राकृत शिलालेख एवं छंद**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में प्राकृत शिलालेख एवं छंद पद्धति का अध्ययन करेगे। भारतीय इतिहास परम्परा का प्राकृत शिलालेख के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करेंगे, साथ ही प्राकृत-अपभ्रंश छन्दों के नियमों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	4. विद्यार्थियों में प्राकृत शिलालेख एवं छंद पद्धति की समझ विकसित होगी। 5. शिलालेखों के माध्यम से भारतीय पुरातत्त्व एवं इतिहास की जानकारी होगी। 6. प्राकृत-अपभ्रंश छन्दों के नियमों का भी ज्ञान होगा। 7. शिलालेखों को पढ़ सकेंगे।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	प्राकृत शिलालेख : अशोक के 1 से 8 शिलालेख (गिरनार पाठ)	12
इकाई – II	खारवेल के शिलालेख का सटिप्पण अनुवाद	12
इकाई – III	प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रश्न	12
इकाई – IV	प्राकृत एवं अपभ्रंश छन्द-निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण- गाहा, पथ्या, विपुला, उग्गाहा, गाहू, सिंहणी, गाहिणी, स्कन्धक, अपभ्रंश के छन्द- द्विपदि कड़वक, घत्ता, पज्झडिका, हेला, चौपाइया।	12
इकाई – V	प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य : छन्द, अलंकार एवं कोश के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय संस्कृत साहित्य के अलंकार ग्रन्थों में प्राकृत गाथाएँ : प्राकृत पुष्करिणी (डा. जगदीशचन्द्र जैन)	12
सहायक पुस्तकें	1. अशोक - डॉ. भण्डारक 2. अशोक - राधा कुमुद मुखर्जी 3. खारवेल शिलालेख - डॉ. शशिकान्त जैन 4. जैन पाण्डुलिपियां एवं शिलालेख : एक परिशीलन, प्रो. राजाराम जैन, श्री गणेश वर्णी संस्थान, वाराणसी, 2002ई. 5. छन्दानुशासन - हेमचन्द 6. प्राकृत पैंगलम (सम्बन्धित अंश) 7. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास - डॉ. गुलाब चन्द चौधरी 8. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9110T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II-A
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत भाषा विज्ञान
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-IV (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में प्राकृत भाषा विज्ञान का अध्ययन करेगे। प्राकृत व्याकरण के परिप्रेक्ष्य में क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्र का अध्ययन करेंगे । प्राकृत भाषा विज्ञान के विभिन्न नियम एवं ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम का अध्ययन करेंगे । पालि-प्राकृत, भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास एवं वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध का अध्ययन करेंगे ।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	**1.** विद्यार्थियों में प्राकृत व्याकरण एवं प्राकृत भाषा विज्ञान की समझ विकसित होगी। 2. प्राकृत भाषा विज्ञान के विभिन्न नियम एवं तथ्यों का भी ज्ञान होगा। 3. ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	प्राकृत व्याकरण, प्राकृत व्याकरण के क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्र में से आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों की व्याख्या पूछना (139 से 182 तक)	12
इकाई – II	प्राकृत व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय	12
इकाई – III	भाषा विज्ञान एवं पालि-प्राकृत, भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास (वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध)	12
इकाई – IV	ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत (लोप, आगम, विपर्यय, ह्रस्वमात्रा नियम) समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, संधि आदि के सोदाहरण, नियम) इसके लिए प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री (अध्याय प्रथम पृ.1 से 23 एवं अध्याय पंचम पृ.113 से 153 का सम्बन्धित अंश का अध्ययन अपेक्षित)	12
इकाई – V	प्राकृत में निबन्ध लेखन	12
सहायक पुस्तकें	1 हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर 2. हेम प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द्र जैन, 1983 3. प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड-1) - डॉ. प्रेम सुमन जैन 4. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री 5. प्राकृत रचनोदय - डॉ. उदय चन्द्र जैन 6 .प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उनके प्राक् संस्कृत तत्त्व - डॉ. के. आर. चन्द्रा, अहमदाबाद। 7. भाषा विज्ञान की रूपरेखा - डॉ. भोलानाथ तिवारी 8. भाषा विज्ञान की रूपरेखा - डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री 9. अपभ्रंश रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर 9. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर 10. प्राकृत हिन्दी कोश - डॉ. उदय चन्द्र जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9111T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II-B
पाठ्यक्रम का नाम	समकालीन आधुनिक प्राकृत साहित्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-IV (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में विद्यार्थी प्राकृत साहित्य के आधुनिक रचनाकारों का अध्ययन करेंगे तथा वर्तमान में निरन्तर प्रवाहित प्राकृत रचनाधार्मिता का भी अध्ययन का अवसर मिलेगा। साथ ही आधुनिक प्राकृत कवि एवं मनीषियों के लोकपरक अवदानों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में आधुनिक प्राकृत कवि एवं मनीषियों के लोकपरक अवदानों की समझ विकसित होगी। 2. वर्तमान में प्रवाहित प्राकृत रचनाधार्मिता की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	वीरब्भुदयं (द्वितीय सर्ग) - डॉ. उदयचंद जैन	12
इकाई – II	भावणा सारो - आचार्य सुनीलसागर	12
इकाई – III	धम्मकहा (अंजणचोरकहा एवं अणंतमईकहा) और तित्थयर भावणा- मुनि प्रणम्य सागर (1-50 गाथा)	12
इकाई – IV	रयणवालकहा (पढम ऊसासो) - चंदनमुनि	12
इकाई – V	आधुनिक प्राकृत मनीषी (घासीलालजी महाराज, आचार्य वसुनंदि, मुनि आदित्यसागर आदि) मनीषी एवं उनके साहित्य का अध्ययन	12
सहायक पुस्तकें	1. वीरब्भुदयं, डॉ. उदयचंद जैन, न्यू बुक कारपोरेशन, नईदिल्ली, 2024ई. 2. नीतिसंगहो (सुनील समग्र), आचार्य सुनीलसागर, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2016ई. 3. तित्थयर भावणा, मुनि प्रणम्यसागर, जैनविद्या, प्राकृत एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, 2014ई. 4. तित्थयर भावणा अनुशीलन, सम्पा. डॉ. सुमत कुमार जैन, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, 2023ई. 5. रयणवालकहा, चंदनमुनि, पटेल सोसायटी, शाहीबाग, अहमदाबाद, 1971ई 6. प्राकृत समय, सम्पा. डा. ज्योति बाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2022ई. 7. अप्पणिब्भर-भारदं, आचार्य वसुनंदी, निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला, नोएडा, 2020ई. 8. धम्मकहा, मुनि प्रणम्यसागर, आचार्य अकलंक देव जैनविद्या शोधालय समिति, उज्जैन, 2016	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9112T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III-A
पाठ्यक्रम का नाम	जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-V (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थियों को इस पत्र में ज्ञान, नय, नवपदार्थ एवं पुद्गलास्तिकाय का अध्ययन शौरसेनी ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान एवं व्याख्या साहित्य, साथ ही शौरसेनी आगमों पर रचित प्रमुख टीकाओं का अध्ययन भी कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा में रचित आगमों में वर्णित सिद्धान्तों की समझ विकसित होगी। 2. आगम प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 3. आगमों के व्याख्या साहित्य के भेद एवं शौरसेनी आगमों की प्रमुख टीकाओं की जानकारी भी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	शौरसेनी आगम साहित्य का परिचय	12
इकाई – II	कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामीकार्तिकेय) गाथा 253 से 301 (ज्ञानस्वरूप एवं नय वर्णन) - डॉ. ए. एन. उपाध्ये	12
इकाई – III	पंचास्तिकाय (आ.कुन्दकुन्द) द्वितीय अधिकार (गाथा 105 से 153 नव पदार्थ एवं पुद्गल अस्तिकाय विवेचन)	12
इकाई – IV	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई – V	आगम के व्याख्या साहित्य का परिचय एवं महत्त्व (निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका) एवं शौरसेनी आगम की प्रमुख टीकायें	12
सहायक पुस्तकें	1. कार्तिकेयानुप्रेक्षा - डॉ. ए. एन. उपाध्ये 2. पंचास्तिकाय -पं. हीरा लाल शास्त्री 3. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3 4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरा लाल शास्त्री 5. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमि चन्द शास्त्री 7. जैन संस्कृति कोश, भाग 1-3 - प्रो. भाग चन्द जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9113T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III-B
पाठ्यक्रम का नाम	पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन विधि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-V (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को पाण्डुलिपि का सामान्य अर्थ एवं स्वरूप, उसके स्रोत, लेखनकला एवं संरक्षण-संवर्धन की प्रवृतियों का अध्ययन कराया जायेगा। इसके अतिरिक्त पाण्डुलिपि संरचना, पाण्डुलिपि शास्त्र संग्रहणकेन्द्र, प्राकृत पाण्डुलिपि सम्पादन के नियम एवं प्राचीनता का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी पाण्डुलिपि की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 2. प्राकृत की प्राचीन पाण्डुलिपियों का ज्ञान विकसित होगा। 3. ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 4. संरक्षित प्राचीन विरासत की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	पाण्डुलिपि विज्ञान का सामान्य परिचय, इतिहास, परम्परा एवं प्रकार तथा लेखन सामग्री	12
इकाई – II	पाण्डुलिपियों के संग्रहण केन्द्रों का परिचय, सर्वेक्षण एवं कृति चयन की प्रविधि तथा विभिन्न ग्रन्थ सूचियों (केटेलॉग्स) का परिचय	12
इकाई – III	पाण्डुलिपि-सम्पादन के नियम : सैद्धान्तिक विश्लेषण	12
इकाई – IV	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित किसी एक पाठ्य कृति का सम्पादन (लगभग40-50 गाथाओं अथवा 4 पृष्ठों का सम्पादन कार्य)	12
इकाई – V	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित कृति का अनुवाद (हिन्दी अथवा अंग्रेजी अनुवाद), कृति परिचय एवं अध्ययन	12
सहायक पुस्तकें	1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला - डॉ. राम गोपाल शर्मा दिनेश 2. पाण्डुलिपि विज्ञान - डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 3. पाठालोचन की भूमिका - डॉ. कत्रे 4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान - डॉ. महावीर प्रसाद जैन 5. भारतीय पुरालिपि विद्या - डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी 6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247-296) 7 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3 8. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 5, पं.अम्बालाल शाह 9. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरा लाल शास्त्री 10. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9114T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV-A
पाठ्यक्रम का नाम	जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में विद्यार्थियों को जैन आचार मीमांसा, गृहस्थाचार, श्रमणाचार, ज्ञान के प्रकार , गुणस्थान, रत्नत्रय, मोक्ष स्वरूप एवं तीर्थंकर परम्परा व प्रमुख तीर्थंकरों का जीवन-दर्शन का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों को जैन गृहस्थाचार एवं मुनि के आचार की समझ विकसित होगी। 2. जैन परम्परा के प्रमुख सिद्धान्तों की जानकारी हो सकेगी । 3. प्रमुख तीर्थंकरों के जीवनचरित्र का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	समणसुत्तं चयनिका (डॉ.के.सी.सोगानी) गाथा 1-60	12
इकाई – II	जैन आचार मीमांसा, गृहस्थाचार, श्रमणाचार	12
इकाई – III	जैन ज्ञान मीमांसा, ज्ञान का स्वरूप, भेद एवं महत्त्व ज्ञान के प्रकार (मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवलज्ञान)	12
इकाई – IV	जैन धर्म का स्वरूप - गुणस्थान, रत्नत्रय एवं मोक्ष स्वरूप	12
इकाई – V	तीर्थंकर परम्परा, ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर का जीवन-दर्शन	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन - मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्रमुनि 2. समणसुत्तं, प्रकाशक सर्वसेवा संघ, वाराणसी, 1975 3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप - आ. देवेन्द्र मुनि 4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी - डॉ. नथमल 5. परमात्म प्रकाश एवं योगसार - डॉ. ए. एन .उपाध्ये 6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर 7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य - साध्वी संघमित्रा 8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन 9. श्रावक धर्म दर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि 10. जैन दर्शन एवं कबीर-एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. मन्जूश्री 11. समणसुत्तं चयनिका, प्रो. कमलचंद सोगानी, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर. 12. समणसुत्तं समख्यातिसंस्कृतटीकोपेतम्, प्रो.श्रीयांश कुमार सिंघई, प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संस्थान, लाडनूं, 2022	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9115T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV-B
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत आगम साहित्य -शौरसेनी आगम
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थियों को इस पत्र में शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान एवं शौरसेनी आगम षट्खण्डागम, समयसार एवं मूलचार ग्रन्थों भाषात्मक एवं मीमांसात्मक अध्ययन कराया जायेगा तथा का शौरसेनी भाषा के नियमों का अध्ययन भी कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा में रचित आगमों में वर्णित सिद्धान्तों की समझ विकसित होगी। 2. शौरसैनी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 3. शौरसेनी प्राकृत में रचित ग्रन्थों का भाषात्मक अध्ययन एवं इस प्राकृत के भाषा-नियमों का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	षट्खण्डागम- धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड, के प्रथम 1से 46 सूत्र)	12
इकाई – II	समयसार - आचार्य कुन्दकुन्द (द्वितीय अधिकार)	12
इकाई – III	मूलाचार - आचार्य वट्टकेर स्वामी (षडावश्यक अधिकार)	12
इकाई – IV	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	12
इकाई – V	जैनागमों का भाषात्मक एवं मीमांसात्मक विवेचन तथा शौरसेनी प्राकृत व्याकरण की सामान्य विशेषताएँ	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन - मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्रमुनि 2. षट्खण्डागम- धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड)सोलापुर 3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप - आ. देवेन्द्र मुनि 4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी - डॉ. नथमल 5. समयसार - आचार्य कुन्दकुन्द 6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर 7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य - साध्वी संघमित्रा 8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन 9. श्रावक धर्मदर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि 10. मूलाचार - आचार्य वट्टकेर स्वामी, सम्पादक -डॉ. फूलचन्द जैन ''प्रेमी'', वाराणसी	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9116T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V-A
पाठ्यक्रम का नाम	जैन कला एवं स्थापत्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में भारतीय कला परम्परा में जैनकला के वैशिष्ट्य का अध्ययन जैन ग्रन्थों के सन्दर्भों के माध्यम से करेंगे। साथ ही जैनशिल्प, स्थापत्यकला, मूर्ति कला एवं चित्रकला की महत्ता का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैन कला की समझ विकसित होगी। 2. जैन धर्म की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी। 3. भारत में स्थित जैनकला के विद्यमान केन्द्रों का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	जैन कला का उद्भव एवं विकास	12
इकाई – II	जैन धर्म और कला का सम्बन्ध	12
इकाई – III	जैन शिल्प, स्थापत्य कला -एलोरा, खजुराहो एवं माउण्ट आबु के मन्दिर	12
इकाई – IV	मथुरा की जैन मूर्तिकला एवं श्रवणबेलगोला की जैन मूर्तियां	12
इकाई – V	जैन चित्रकला - अजन्ता, एलोरा की गुफायें	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री 2. जैन चित्र कल्पद्रुम - साराभाई नवाब, 1936, अहमदाबाद 3. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा और मन्दिर - वासुदेव उपाध्याय 4. भारतीय मूर्तिकला का इतिहास - रमानाथ मिश्र 5 . कला-विण्णाण, आचार्य वसुनंदी, निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला, नोएडा, 2021ई. 6. स्टडीज इन जैन आर्ट - यू. जी. शाह, 1955, बनारस 7. जैन मिनिएचर पेंटिंग्स फ्राम वेस्टर्न इंडिया - मोतीचन्द, 1914 8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. प्रेम सुमन जैन 9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9117T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V-B
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में विद्यार्थी प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय, प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ एवं प्राकृत काव्य साहित्य पर शोधात्मक विमर्श के अन्तर्गत सम्पादित एवं समालोचनात्मक शोध कार्य, शोध की भावी दृष्टि, शोध संस्थाएँ एवं आधुनिक शोध कर्ताओं का परिचयात्मक विश्लेषण का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र में प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय, प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत काव्य साहित्य की शोधपरकदृष्टि का ज्ञान होगा। 3. प्राकृत शोध संस्थाएँ एवं आधुनिक शोध कर्ताओं की परिचयात्मक जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय एवं प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ और महत्ता	12
इकाई – II	महाकाव्यों की परम्परा एवं प्राकृत महाकाव्यों का स्वरूप: ऐतिहासिक, पौराणिक एवं शास्त्रीय महाकाव्य	12
इकाई – III	प्राकृत चरित एवं कथा साहित्य का वैविध्य एवं वैशिष्ट्य	12
इकाई – IV	प्राकृत खण्डकाव्य एवं मुक्तककाव्य : परम्परा एवं विकास	12
इकाई – V	प्राकृत काव्य साहित्य पर शोधात्मक विमर्श: 1. सम्पादित एवं समालोचनात्मक शोध कार्य, 2. शोध की भावी दृष्टि, 3.शोध संस्थाएँ अवं आधुनिक शोध कर्ताओं का परिचयात्मक विश्लेषण	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री 2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3 3. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरा लाल शास्त्री 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमि चन्द शास्त्री 6. प्राकृत भारती- प्रो. प्रेम सुमन जैन 7. जैन संस्कृति कोश - प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1-3 8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. प्रेम सुमन जैन 9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9118T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI-A
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत के प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थी इस पत्र में प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा एवं सृजनशीलता से रचना करने वाले प्रमुख मनीषियों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	विद्यार्थी को प्राच्यविद्याओं के क्षेत्र में अपनी सृजनशीलता के माध्यम से अवदान करने वाले प्राकृत रचना एवं रचनाकारों के बारे में समझ विकसित होगी एवं इनका ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	600 ई.पू. से प्रथम शताब्दी तक : भगवान् महावीर एवं उनकी आचार्य परम्परा का इतिहास, श्रुतकेवली परम्परा, श्रुतकेवली भद्रबाहु, स्थूलभद्राचार्य, धरसेनाचार्य, पुष्पदंत एवं भूतबली, गुणधराचार्य आदि।	12
इकाई – II	द्वितीय से पांचवीं शताब्दी तक : जैन आगमिक वाचनाएँ, आर्य स्कंदिल, वट्टकेर स्वामी, शिवार्य, यतिवृषभाचार्य, देवार्धिगणी क्षमाश्रवण आदि।	12
इकाई – III	छठी से दसवीं शताब्दी तक : आचार्य सिद्धसेन, प्रवरसेन, वाक्पतिराज, स्वामी कार्तिकेय, निर्युक्तिकार भद्रबाहु, भाष्यकार जिनभद्रगणि, संघदासगणि, हरिभद्रसूरि, वीरसेन स्वामी, जिनसेन, स्वयंभू आदि।	12
इकाई – IV	ग्यारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी तक : हेमचंद्राचार्य, नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवसेनाचार्य, महाकवि पुष्पदंत, वीरकवि, देवेन्द्रगणि, नेमिचंद्रसूरि, आम्रदेवसूरि आदि।	12
इकाई – V	सोलहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक : मुनि पद्मसिंह, यशोविजय, श्रुतसागराचार्य, कवि रइधू, पण्डित तेजपाल आदि।	12
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डा. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247-296) 2. प्राकृत के प्रमुख दिगम्बर जैन ग्रन्थ: एक परिचय, सम्पा. डा. कमलचंद सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2017 4. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1- 6, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वनारस 5. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डा. जगदीश चन्द्र जैन 6 .जैन संस्कृति कोश - प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1-3 7 प्राकृत रत्नाकर, प्रो. प्रेम सुमन जैन, राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला, 2012ई. 8. भगवान् महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग 1-4, डा. नेमिचंद्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती, मुजफफरनगर, 2012ई. 9. जैनशासन के प्रभावक आचार्य, साध्वी संघमित्रा 10. प्रमुख जैन आचार्यों का परिचय, प्रो. वीरसागर जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2019ई.	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर Note - इस पत्र में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध अथवा अप्रकाशित कृति का हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद लगभग 50-60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा अथवा इंटर्नशिप, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी। **Note- यह प्रश्न पत्र केवल नियमित विद्यार्थियों के लिए मान्य होगा।**	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9119S
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI-B
पाठ्यक्रम का नाम	लघु शोध-प्रबन्ध : किसी प्राकृत एवं जैनविद्या विषय पर लघु शोधप्रबन्ध अथवा अप्रकाशित कृति का हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद अथवा इंटर्नशिप
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	रचनात्मक एवं प्रायोगिक / नैदानिक मूल्यांकन
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्रस्तुत पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध एवं लेखनकला में अपने रुचि और प्रतिभा का विकास करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	विद्यार्थी इस पत्र के माध्यम से शोध एवं लेखनकला अथवा इंटर्नशिप में अपनी प्रतिभा को बढ़ाने में सहायता प्राप्त करेंगे और भविष्य में उन्हें शोधकार्य करने में कठिनाई नहीं होगी।

लघु शोध को असाइन करने, मॉनिटर करने और मूल्यांकन करने के लिए दिशानिर्देश :-

1. जो छात्र शोध का विकल्प चुनते हैं उन्हें एक शोध निर्देशक नियुक्त किया जाएगा जो विभाग में नियमित शिक्षकों में से एक होगा। सत्र की शुरुआत के पहले सप्ताह में विभागीय समिति की बैठक में विषयों को मंजूरी दी जायेगी ।
2. चतुर्थ सेमेस्टर परीक्षा शुरू होने से पहले शोध प्रबंध को मेंटर द्वारा विधिवत अग्रेषित कर विभागाध्यक्ष को जमा करना होगा।
3. इस 4 क्रेडिट कोर्स के लिए 120 घंटे की शैक्षणिक गतिविधि होगी। मेंटर के साथ 20 घंटे संपर्क और 100 घंटे पहले से तैयारी होगी। संपर्क घंटे संकाय सदस्यों के कार्यभार का हिस्सा नहीं होंगे। ये अध्ययन घंटे पीएचडी मार्गदर्शन में समर्पित कार्य के समान होंगे।
4. शोध प्रबंध छठे पेपर (PKT9119S) के बदले में होगा और 80 EoSE + 20 आंतरिक मूल्यांकन =100 अंकों का होगा।
5. सेमेस्टर परीक्षा के अंत के लिए, शोध प्रबंध की जांच तीन परीक्षकों के एक बोर्ड द्वारा की जाएगी जिसमें एक बाहरी परीक्षक, निर्देशक, विभगाध्यक्ष या उसके नामित व्यक्ति शामिल होंगे। 80 अंकों का वितरण इस प्रकार होगा- i)लिखित निबंध- 30 अंक, ii)स्पष्टता और प्रोजेक्ट आउटपुट- 20 अंक, iii)पावर पॉइंट्स प्रेजेंटेशन- 15 अंक, iv)मौखिक परीक्षा- 15 अंक
6. आंतरिक मूल्यांकन अंक पर्यवेक्षक द्वारा प्रस्तुत किये जायेंगे। आंतरिक मूल्यांकन मेंटर को सौंपी गई लघु मध्यावधि प्रगति रिपोर्ट के आधार पर किया जाना चाहिए।
7. लघु शोध के मुखपृष्ठ पर 'एमए जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर के छठे पेपर के स्थानपर' लिखा होना चाहिए।
8. ग्रंथ सूची को छोड़कर, निबंध न्यूनतम 50-70 पृष्ठों का होना चाहिए।
9. साहित्यिक चोरी की रिपोर्ट संलग्न की जानी चाहिए। अनुसंधान पद्धति की आवश्यकताएं पीएचडी थीसिस के समान ही होंगी।